NOVEMBER 2022, INDORE

COT COSMOS

AN INNITIATIVE BY SMART INFO GROUP

वर्तमान में वेट एंड वॉच की स्थिति में है

टेक्सटाइल इंडस्ट्री

-SUBHASH GARG, CMD
आर के एस कॉटन प्रा.लि.

"कॉटन कीमतें बढ़ने से टेक्सटाइल इंडस्ट्री में कई सारे उतार-चढ़ाव आए हैं। जिनर्स से लेकर मिल व्यापारियों तक हर कोई अनिश्चितता की स्थिति में है। लेकिन, इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि टेक्सटाइल इंडस्ट्री संकट में है। दरअसल, इस इंडस्ट्री में यह वेट एंड वॉच दौर है। अभी व्यापार करने का नहीं बल्कि मार्केट को समझने का समय है। आने वाले 6 महीने इस इंडस्ट्री के लिए कठिन जरूर है लेकिन इसके बाद इंडियन टेक्सटाइल मार्केट बहुत मजबूती के साथ खड़ा होगा। यह कहना है फतेहाबाद, हरियाणा के जाने-माने कॉटन ट्रेडर सुभाष गर्ग का।"

फार्मिंग से लेकर एक्सपोर्ट तक

आर के एस कॉटन प्रायवेट लिमिटेड के सीएमडी गर्गजी ने बताया कि मैं पिछले 40 सालों से इस इंडस्ट्री में हूं। इस दौरान मैंने यह भलीभांति समझ लिया है कि यहां करंट मार्केट सिनेरियो को समझकर ही व्यापार करने में समझदारी है। व्यापार में मुनाफा पाने और लंबे समय तक बने रहने के लिए फसल की वर्तमान स्थिति, उसकी मात्रा, खपत की वास्तविकता और अंतराष्ट्रीय नीतियों जैसे जरूरी पहलुओं की सही जानकारी होना जरूरी है। इस जानकारी के लिए हम किसी संस्था पर निर्भर नहीं है। कॉटन बिजनेस में हम फार्मिंग से लेकर एक्सपोर्ट तक हर सेग्मेंट से जुड़े हुए है। इसलिए ग्राउंड लेवल की जानकारी जुटा पाते है। हमारी 62 एकड़ जमीन भी है जिस पर हम कपास की ही खेती करते हैं।

1250 करोड़ रूपए का टर्न ओवर

उन्होंने बताया कि मैंने साल 1982-83 में पानीपत में जिनिंग यूनिट के साथ इस इंडस्ट्री में शुरूआत की थी। तब वहां देसी कॉटन अच्छी मात्रा में पाया जाता था। लेकिन समय के साथ पानीपत में देसी कॉटन की कमी होती गई जिससे जिनर्स का मार्जिन भी कम हो गया। जिसके चलते ज्यादातर व्यापारी रिसायकल यूनिट की ओर शिफ्ट हो गए। इसी वजह से साल 1996-97 में मैंने कॉटन टेडिंग की शुरूआत की। उस दौर में इस बिजनेस का मेरा सालाना टर्न ओवर 50 करोड़ रूपए का था जो आज बढ़कर 1250 करोड़ रूपए हो चुका है। वर्तमान में हम आरती इंटरनेशनल लि, स्पोर्टकिंग इंडिया लि, गर्ग एक्रेलिक लि, टाइडेंट लि, डीसीएम लि, एलडीसी, ओलम एग्रो, कोफको, गिन्नी ग्रुप और विटारा जैसी कंपनीज के साथ काम कर रहे हैं।

दोबारा बूम आएगा इंडस्ट्री में

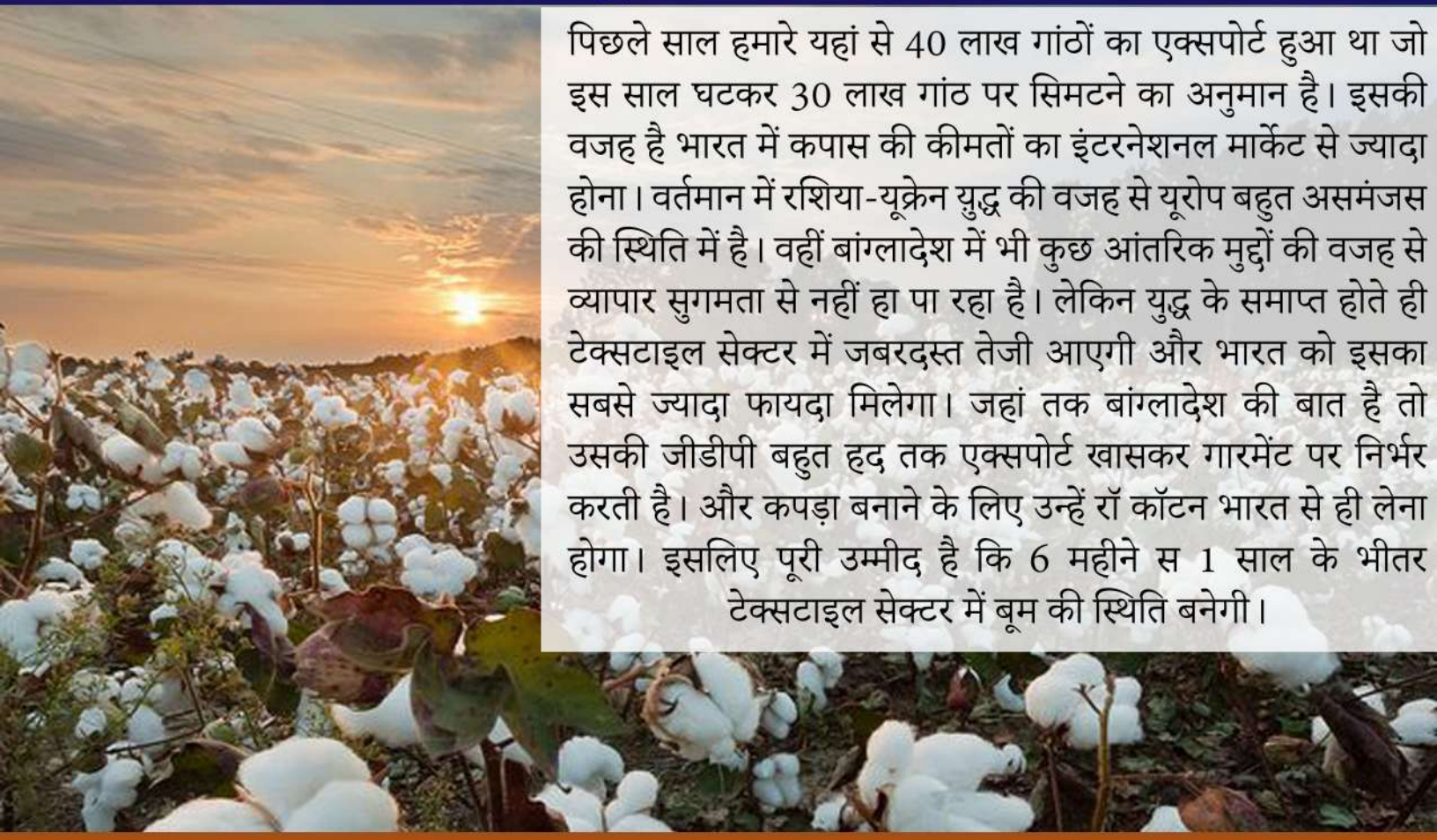

पिछले साल हमारे यहां से 40 लाख गांठों का एक्सपोर्ट हुआ था जो इस साल घटकर 30 लाख गांठ पर सिमटने का अनुमान है। इसकी वजह है भारत में कपास की कीमतों का इंटरनेशनल मार्केट से ज्यादा होना। वर्तमान में रशिया-यूक्रेन युद्ध की वजह से यूरोप बहुत असमंजस की स्थिति में है। वहीं बांग्लादेश में भी कुछ आंतरिक मुद्दों की वजह से व्यापार सुगमता से नहीं हा पा रहा है। लेकिन युद्ध के समाप्त होते ही टेक्सटाइल सेक्टर में जबरदस्त तेजी आएगी और भारत को इसका सबसे ज्यादा फायदा मिलेगा। जहां तक बांग्लादेश की बात है तो उसकी जीडीपी बहुत हद तक एक्सपोर्ट खासकर गारमेंट पर निर्भर करती है। और कपड़ा बनाने के लिए उन्हें रॉ कॉटन भारत से ही लेना होगा। इसलिए पूरी उम्मीद है कि 6 महीने स 1 साल के भीतर टेक्सटाइल सेक्टर में बूम की स्थिति बनेगी।

सुझाव

जिस तरह कोविड के बाद मिल्स की डिमांड में जबरदस्त तेजी आई थी, ठीक वैसे ही रशिया-यूक्रेन युद्ध के बाद टेक्सटाइल इंडस्ट्री में दोबारा तेजी की स्थिति बनेगी। यदि इस व्यापार में अच्छा मुनाफा चाहते है तो आगामी 6 महीने मार्केट के सुधरने का इंतजार करें।

मध्यप्रदेश में कपास उद्योग संकट के घेरे में है। लगातार प्रयासों के बाद भी वहां की सरकार ने मंडी टैक्स के खिलाफ अब तक कोई कदम नहीं उठाया है। सरकार से मिले आश्वासन के बाद जिनर्स ने 18 अक्टूबर को अपनी हड़ताल तो खत्म कर दी लेकिन, उनकी समस्या पर सरकार ने अब तक कोई सुध नहीं ली है। मध्यांचल कॉटन जिनर्स एंड ट्रेडर्स एसोसिएशन के प्रेसिडेंट विनोद जैन ने बताया कि 8 दिन की इस हड़ताल से प्रदेश के कपास उद्योग को 250 करोड़ और प्रदेश सरकार को 37 करोड़ जीएसटी का घाटा हुआ है।

एमपी में हड़ताल का असर, 8 दिन में 250 करोड़ का बिजनेस लॉस

यह है सवाल

एक तरफ तो एमपी सरकार प्रदेश में नई इंडस्ट्री लगाने के लिए रेड कारपेट बिछा रही है और दूसरी ओर जो इंडस्ट्री पहले से प्रदेश में है और लाखों लोगों को रोजगार प्रदान कर रही है उसके असतित्व को बचाने के लिए कोई प्रयास

यह है गणित

उन्होंने बताया कि प्रदेश में रोजाना 10 हजार गांठ आती है और महीने में 25 दिन व्यापार होता है। मोटे तौर पर देखे तो 2.5 लाख गाठ का व्यापार हर माह होता है। एक गांठ की कीमत 37 हजार रूपए है। यदि हम औसतन 2 लाख गांठ भी माह की माने तो 700 से 750 करोड़ का व्यापार कॉटन उद्योग से होता है। ऐसे में 8 दिन की हड़ताल से प्रदेश को लगभग 250 करोड़ का घाटा हुआ है। और इससे सरकार को मिलने वाले 37 करोड़ रूपये के जीएसटी की भी हानि हुई है।

समय मिलने का इंतजार

दरअसल, मध्यप्रदेश में पड़ोसी राज्यों की तुलना में तीन से चार गुना ज्यादा मंडी टैक्स वसूला जा रहा है जिसकी वजह से प्रदेश की 100 से ज्यादा जिनिंग यूनिट पड़ोसी राज्यों में शिफ्ट हो चुकी है। इसी वजह से अक्टूबर माह में 11 तारीख से जिनर्स अनिश्चिति कालीन हड़ताल पर गए थे। लगभग 8 दिन बाद सरकार से आश्वासन मिलने पर हड़ताल तो बंद कर दी गई लेकिन जिनर्स अब तक सरकार से समय मिलने के इंतजार में है।

वर्तमान स्थिति

हमारे यहां 1.50 प्रति सेकड़ा मंडी टैक्स वसूला जा रहा है और इसके साथ .20 निराश्रित शुल्क भी लिया जा रहा है। ऐसे में नई जिनिंग फैक्ट्री लगाना तो दूर व्यापारी अपनी जमी जमाई जिनिंग यूनिट भी दूसरे राज्यों में शिफ्ट कर रहे है। पिछले साल ही खेतिया की 5 इंडस्ट्री महाराष्ट्र में शिफ्ट हुई है। अब तक प्रदेश की 100 से 125 जिनिंग फैक्ट्री दूसरे राज्यों में जा चुकी है। इतना ही नहीं कुछ साल पहले तक एमपी में 5 से 6 लाख गांठ बाहर से आती थी लेकिन मंडी टैक्स की वजह से अब इतनी ही गांठ प्रदेश से बाहर जाने लगी है।

खतरे में है भविष्य

मध्यप्रदेश का कपास बिजनेस दिन पर दिन कम होता जा रहा है। मुख्यमंत्रीजी ने हमें आश्वासन दिया था कि हम हड़ताल का विराम दें वे दिवाली बाद हमसे इस मद्दे पर मुलाकात करेंगे। लेकिन लगातार प्रयासों के बाद भी अब तक हमें मुलाकात का समय नहीं मिला है। हमारी सरकार से यही अपील है कि मंडी टैक्स को कम करने के लिए जल्द ही कोई कदम उठाए, अन्यथा प्रदेश में कॉटन उद्योग का भविष्य खतरे में है।

विनोद जैन, अध्यक्ष,
मध्यांचल कॉटन जिनर्स एंड ट्रेडर्स एसोसिएशन

WE ALWAYS

DELIVER MORE THAN EXPECTED

RAYANCE
TECHNO GREENS INDUSTRIES

Address: C2, 100, Manu Prabha, N-4 CIDCO, Sector F-1,
Gurusahani Nagar, Aurangabad (M.H)-431003

info@rtgi.in www.rtgi.in 7201026177 / 7387917555

MAKE IN INDIA

पिछले 5 सालों की सबसे कमजोर आवक के साथ हुआ कपास सीजन 2022-23 का आरंभ

भारत में मुख्यतः 11 राज्यों में कपास की खेती की जाती है। अलग-अलग जलवायु के चलते कही बुआई मार्च-अप्रैल से ही शुरू कर दी जाती है तो कही जून-जुलाई में कपास बोया जाता है। इसी कारण आवक भी सितंबर से शुरू होने लगती है। अक्टूबर आते-आते पूरे देश में कपास की आवक शुरू हो जाती है। इस साल भी मंडियों में आावक तो शुरू हो चुकी है लेकिन अगर आंकड़ों पर गौर करें तो इस बार अक्टूबर माह तक आई कपास आवक पिछले पांच सालों की सबसे कमजोर आवक है। साल 2021 में अक्टूबर तक की आवक 31,12,000 कॉटन बेल्स थी वही इस साल अक्टूबर तक आई कपास आवक महज 12,70,900 बेल्स है।

एक नजर पिछले 5 सालों की अक्टूबर माह तक की कपास आवक पर-

LAST FIVE YEAR COTTON BALES ARRIVAL TILL OCTOBER					
STATE	2018	2019	2020	2021	2022
Punjab	192,000	130,000	215,000	128,000	28,100
Haryana	450,000	350,000	409,000	181,000	140,000
Upper Rajasthan	336,000	201,000	342,000	269,000	114,200
Lower Rajasthan	265,000	174,000	270,000	270,000	104,950
Total North Zone	**1,243,000**	**855,000**	**1,236,000**	**848,000**	**387,250**
Gujarat	425,000	180,000	525,000	765,000	327,250
Maharashtra	200,000	60,000	325,000	406,000	99,000
Madhya Pradesh	300,000	110,000	200,000	268,000	94,300
Total Central Zone	**925,000**	**350,000**	**1,050,000**	**1,439,000**	**520,550**
Telangana	325,000	60,000	110,000	275,000	40,500
Andhra Pradesh	60,000	60,000	120,000	190,000	126,900
Karnataka	60,000	75,000	150,000	275,000	124,900
Tamil Nadu	-	-	50,000	20,000	70,700
Total South Zone	**445,000**	**195,000**	**430,000**	**760,000**	**363,000**
Orissa	-	-	-	30,000	100
Others	-	-	-	35,000	-
TOTAL ARRIVAL	**2,613,000**	**1,400,000**	**2,716,000**	**3,112,000**	**1,270,900**

अनुमानों पर लगा प्रश्नचिन्ह

गौरतलब है, कि इस साल पूरे देश में कपास का रकबा बढ़ा है और किसानों ने ज्यादा मात्रा में कपास बोया है। इसी कारण विशेषज्ञों ने इस साल कपास आवक पिछले साल से बेहतर आने के अनुमान लगाए हैं। लेकिन अक्टूबर माह में आए शुरूआती आंकड़े इन अनुमानों पर प्रश्नचिन्ह लगा रहे है। अक्टूबर 2022 तक नार्थ झोन में कुल 3,87,250 बेल्स, सेंट्रल झोन में 5,20,550 और साउथ झोन में 3,63,000 कॉटन बेल्स की आवक हुई है। जो पिछले साल की तुलना में आधे से भी कम है। साल 2021 में अकेले सेंट्रल झोन से ही कुल 14,39,000 बेल्स की आवक हुई थी जो इस साल की पूरे देश से आई आवक 12,70,000 बेल्स से भी ज्यादा है।

जिनर्स के लिए संघर्ष का है यह समय

जिनिंग इंडस्ट्री में 20 साल से कॉटन परचेसर ऑफिसर की अहम भूमिका निभा रहे रोहित चौधरी से चर्चा

BAAT CHEET

-रोहित चौधरी
कॉटन परचेसर ऑफिसर

सवाल- कॉटन भाव को लेकर इंडस्ट्री में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी हुई है, ऐसे में जिनर्स को किस तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है ?
जवाब- पिछले साल कॉटन के भाव बहुत ज्यादा 14 हजार रूपए तक पहुंच गए थे। जबकि फिलहाल भाव 8000 से 8500 के बीच है। भाव कम होने की वजह से किसान कपास को बेचने की जगह स्टॉक करके रख रहे हैं। इसकी वजह से देशभर की मंडियों में आवक बहुत धीमी हो गई है। जो जिनर्स माल खरीदना चाहते है उन्हें माल मिल नहीं पा रहा है। और ज्यादातर जिनर्स डिस्पेरिटी से हो रहे नुकसान के चलते माल खरीद नहीं रहे है। कुल मिलाकर देखा जाए तो जिनर्स के लिए यह समय बेहद संघर्षमयी है।

सवाल- आपके अनुसार कॉटन मार्केट में स्थिति सामान्य होने और व्यापार को सुचारू होने में कितना समय लग सकता है?
जवाब - इस बार सीजन की शुरूआत कमजोर आवक के साथ हुई है। यदि मौसम अनुकूल होता और आवक सामान्य होती तो अब तक रोजाना 70से 80 हजार बेल्स की आवक होना शुरू हो जाती लेकिन वर्तमान में केवल 30 से 35 हजार कॉटन बेल्स की आवक ही हो रही है। आवक के सामान्य होने और बाजार में स्थिरता आने में अभी 2 से 3 महीने का समय और लग सकता है। चूंकि सीजन में गति आने में समय लग रहा है इसलिए इस बार कॉटन सीजन के लंबा होने यानी जून-जुलाई तक चलने का अनुमान है।

सवाल- मंडियों में कपास आवक धीमी होने के कारण क्या है?
जवाब - मंडी में कपास आवक धीमी होने से व्यापार की गति भी बहुत धीमी हो गई है। इस आवक के धीमी होने के पीछे मुख्यतः दो कारण है। पहला कॉटन भाव का प्रतिदीन कम होना, जिसकी वजह से किसान कपास नहीं बेच रहे है। इनदिनों किसान सक्षम हो चुके है और अच्छे भाव मिलने की उम्मीद में स्टॉक कर रहे है। नतीजतन, हमें रॉ कॉटन नहीं मिल पा रहा है। दूसरा क्रॉप के आखिर में लगातार हुई बारिश से कई जगह पर फसल को नुकसान हुआ है, जिसके चलते अभी आवक मंडी में आने में कुछ दिन और लग सकते हैं।

सवाल - इस साल कॉटन क्रॉप कैसी है ? क्या बारिश और कीटों की वजह से फसल को अधिक नुकसान पहुंचा है?
जवाब - सीजन 2022-23 में कपास बुआई का एरिया पूरे देश में बढ़ा है। सभी को एक अच्छी क्रॉप की उम्मीद थी। और विस्तृत तौर पर देखा जाए तो पिछले साल की तुलना में इस साल क्रॉप अच्छी ही आई हैं प्रति एकड़ पैदावार में भी सुधार हुआ है और क्वालिटी भी पिछले साल से अच्छी है। अनुमान है कि 3.50 करोड़ बेल्स की आवक होगी। कुछ इलाकों में बारिश और कीटों ने फसल को नुकसान जरूर पहुंचाया है लेकिन उन्हें छोड़ दे तो बाकि जगह फसल की स्थिति बहुत बेहतर है।

सवाल - पिछले 5 सालों में कॉटन मार्केट की स्थिति कैसी रही और आने वाले समय को लेकर आप क्या सोचते है?
जवाब - कॉटन परचेसर ऑफिसर के तौर पर काम करते हुए मुझे 18 से 20 साल का समय हो चुका है। इस दौरान मैंने यह अनुभव किया है कि हर 5 साल में से 1 साल सरकारी खरीद का होता है। कारण चाहे जो हो लेकिन 5 सालों में सीसीआई की खरीदी का साल आ ही जाता है। कोरोना के समय और उससे पहले के सालों में हम यह स्थिति स्पष्ट देख सकते है। पिछले साल सट्टेबाज मार्केट पर हावी रहें, इससे बाजार अस्थिर रहा। सट्टेबाजी पर रोक लग जाए तो मार्केट में स्थिरता लौटेगी।

100 YEARS OF CAI

सीएआई ने अपने 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर एक शानदार रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया। 17 और 18 अक्टूबर को मुंबई के जियो वर्ल्ड कन्वेशन में हुए इस कार्यक्रम में इंडस्टी की कई दिग्गज शामिल हुए। इस दौरान एसआईएस की टीम ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। पेश है कार्यक्रम की कुछ झलकियां।

TRADE FAIR

Yarn, Fabric & Accessories Trade Show 2022

ADD -Saya Grand Club & Resort, Anjur Village, Bhiwandi, Maharashtra, India.
DATE - 10th Nov, 2022 to 12th Nov, 2022
(Fabrics, Yarns)

Yarnfab - TX Kolkata 2022

ADD - Kolkata, India
DATE - 11th Nov, 2022 to 13th Nov, 2022
(Yarn)

Garknit-X Kolkata 2022

ADD - Eco Tourism Park, Kolkata, India
DATE - 11th Nov, 2022 to 13th Nov, 2022
(yarn, fabrics, and accessories)

Mare di Moda 2022

ADD - Palais des Festivals, Cannes, France
DATE - 8th Nov, 2022 to 10th Nov, 2022
(fabrics and accessories)

International Sourcing Expo Australia 2022

ADD - Melbourne Convention and Exhibition Centre, Melbourne, Australia
DATE - 15th Nov, 2022 to 17th Nov, 2022
(Accessories and Textiles)

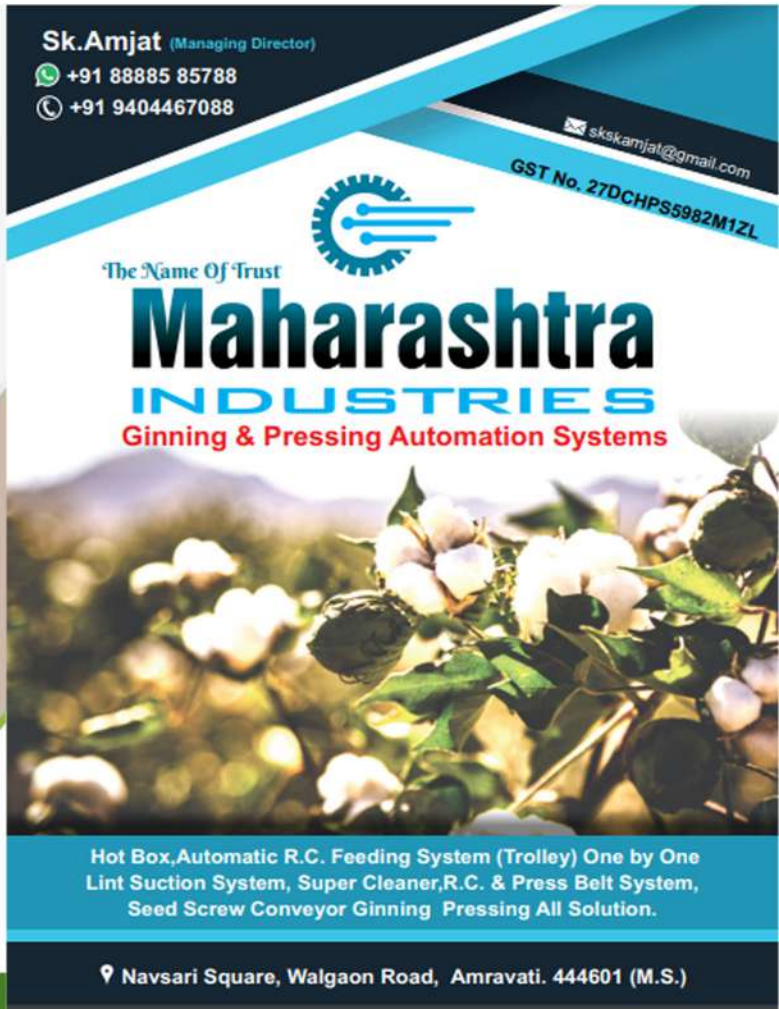

NEWS HIGHLIGHTS (OCTOBER 2022)

शेयर मार्केट निवेशकों के लिए राहतभरा रहा अक्टूबर माह, सितंबर में जहां गिरा था मार्केट वहीं अक्टूबर महीने में 3957.78 अंक बढ़कर सेंसेक्स पहुंचा 60,746 के स्तर पर।

पूरे महीने डॉलर के मुकाबले रूपए में रहा कमजोरी का रूख, माह की शुरूआत में रूपए की कीमत थी 81.62 जो माह अंत में 1.16 बढ़कर हो गई 82.78 रूपये।

ऑल इंडिया फिजिकल कॉटन मार्केट में अक्टूबर माह में भी लगातार घटी कॉटन कीमतें, माह अंत तक नार्थ झोन में 675 रूपए प्रति मंड, सेंटल और साउथ झोन में 3500 से 7000 रूपए तक घटे कॉटन के दाम।

पाकिस्तान में बाढ़ की वजह से कपास की एक तिहाई फसल हुई बर्बाद, 100 से ज्यादा छोटी मिलों में प्रोडक्शन हुआ बंद।

सुस्त मांग के चलते तमिलनाडू की कपड़ा और परिधान इकाईयों ने खपत की कम, इससे यार्न कीमतों में आई भारी गिरावट, एक महीने में 40 रूपए किलो सस्ता हुआ यार्न।

आंध्रप्रदेश में वैश्विक संकट का हवाला देते हुए मिलों ने की तालाबंदी की घोषणा, मिल मालिकों ने कहा गंभीर संकट का सामना करने को मजबूर कपड़ा मिलें।

बांग्लादेश की गारमेंट मैन्युफेक्चरर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष ने यूके से समर्थन जारी रहने की जताई उम्मीद।

कमजोर आवक के साथ हुई कॉटन सीजन 2022-23 की शुरूआत, त्यौहारी माहौल के बाद बाजार में तेजी आने के लगाए जा रहे कयास।

केंद्रीय मंत्री पियुष गोयल ने कहा-देश के कपड़ा निर्यात को 6 सालों में 100 अरब तक पहुंचाना हमारा लक्ष्य।

बारिश और कीटों से हुए फसल नुकसान के लिए गुजरात मुख्यमंत्री ने की 630 करोड़ की सहायता राशि की घोषणा।

THE ADVANCEMENT IN TEXTILE SECTOR OVER YEARS

Textile sector in India is one of the oldest industries of Indian economy. Ranging from hand spun and hand woven units of manufacturing, it has a come a long way to most advanced and sophisticated power generated mills. Contributed by both natural fibres like cotton, jute, silk, wool to manmade fibres like viscose, rayon, polyester the textile sector has witnessed remarkable transformations in terms of capital, production and technology.

India has a total of 4% share in global textile and apparel marketplace and it is expected to reach US$ 190 billion by the end of 2025-26. If we ponder upon cotton, it has a key role to play in sustaining the livelihood of approximately 5.8 million cotton farmers and 40-50 million people engaged in relevant activities such as cotton processing and trade. India is the largest producer in the world. For cotton season 2021-22, the domestic consumption of cotton is expected as 338 lakh bales and by 2030 cotton production might reach 72 million tonnes driven by consumers demand.

However, the global economy stands in a fragile state. The global crisis, war situations in Middle East countries, political turmoil, fluctuations in oil prices are causing vital concerns to all business sectors and especially textile. Its fate is at the verge of decisive factors like collaboration and jointly developing solution.

US market is already in reviving state whereas European and Middle East countries still face gloomy conditions. China continues to be a global leader and their export grew multifold over last two decades. India may be benefitted from the expected cost increase in China, however the Make in India initiative by the Government assures to create big opportunities for it in textile world.

Currently in Indian market menswear segment is leading, however women's wear and kidswear are growing at a rapid rate with girls kidswear at the highest pace.

Also, in recent the textile minister Piyush Goyal said to hit a 100 billion export market in coming 5 years that will take the industry's value to nearly USD 250 billion inclusive both domestic and international market. He accentuated discussing new ideas to strengthen the textile sector.

Currently in Indian market menswear segment is leading, however women's wear and kidswear are growing at a rapid rate with girls kidswear at the highest pace.

Despite of all the obstacles coming Indian textile sector's way, the Indian government has come up with several measures to support and reinforce the industry in various states. Few are listed here-

- **In June 2022, Amazon signed an MoU with Manipur Handloom and Handicrafts Development Limited to encourage the development of weavers and artisans of state.**
- **In June 2022, Kerela government declared to provide free training to around 2,000 candidates under SAMARTH scheme of textile industry.**
- **In May this year, Minister of MSME inaugurated the centre of Excellence for Khadi at NIFT, NEW DELHI.**
- **In March 2022, Tamil Nadu CM MK Stalin announced that State Industries Promotion Corporation of Tamil Nadu Ltd. Will set up a mega textile park at Virudhunagar district.**
- **For export of handloom products, Handloom Export promotion Council (HEPC) is participating in various international fairs to sell their product in international market under NHDP.**

The future of Indian textile industry looks promising driven by strong domestic consumption and high export demands. The government is supporting the sector by funding and machinery sponsoring. Further growth will be extended by increasing demands in housing, hospitality and health care. The overall Indian textile market is expected to be worth more than US$ 209 billion by the end of 2029.

SWATI AGRAWAL
(Textile Blogger)

A quick view of last 5 years cotton report

In the cotton market the ups and downs are continuing. Whether it is the International Cotton Exchange Market or MCX, there has been a change in the prices of cotton everywhere. In the last 5 years, cotton prices for futures deals on the ICE platform have fallen by about 7 to 10 cents, while it has seen a significant decrease of 41 to 48 cents compared to last year.

SMART INFO SERVICES

CALL : 91119 77771 - 5

LAST FIVE YEAR REPORT

ICE COTTON							
MONTH	31.10.18	31.10.19	31.10.20	31.10.21	31.10.22	1 YEAR CHANGE	5 YEAR CHANGE
DEC	79.03	64.44	68.92	119.84	72	-47.84	-7.03
MARCH	80.48	65.88	69.78	115.03	71.64	-43.39	-8.84
MAY	81.66	66.87	70.58	113.45	71.85	-41.6	-9.81
MCX (BALES)							
OCT	22000	19100	19170	33740	30770	-2970	8770
NOV	22240	19300	19450	33800	28650	-5150	6410
DEC	22360	19300	19580	32800	27770	-5030	5410
NCDEX (KAPAS)							
APRIL	1175	1088.5	1112.5	1857	1528	-329	353
NCDEX (COCUD KHAL)							
DEC	1835	2280.5	1850	2630	2466	-164	631
JAN	1843	2226	1862	2642	2458	-184	615
CURRENCY ($)							
INDIAN (Rupee)	73.87	70.81	74.55	75	82.63	7.63	8.76
PAK (Pakistani Rupee)	132.93	154.98	160.43	171.52	221.507	49.987	88.577
CNY (Chinese yuan)	6.98	7.03	6.69	6.4	7.2701	0.8701	0.2901
BRAZIL (Real)	3.69	3.99	5.74	5.63	5.14	-0.49	1.45
SMART INFO SERVICES 91119-77775							
COTLOOK "A" INDEX	86.4	76.45	76.7	123.6	89.5	-34.1	3.1
BRAZIL COTTON INDEX	78.92	62.27	70.31	105.42	97.21	-8.21	18.29
USDA SPOT RATE	73.67	61.58	64.21	116.66	72.36	-44.3	-1.31
MCX SPOT RATE	22490	18850	19170	32440	30970	-1470	8480
KCA SPOT RATE (PAKISTAN)	8650	9450	10100	15400	16000	600	7350
GOLD ($)	1219	1513	1878.7	1791.85	1653	-138.85	434
SILVER ($)	14.31	18.07	23.71	24.1	19.67	-4.43	5.36
CRUDE ($)	65.08	54.31	35.77	84.23	89.31	5.08	24.23

On the Multi Commodity Exchange, the price of cotton has decreased as compared to last year. But, compared to the last 5 years, the cotton rate has seen an increase of about 5 to 9 thousand. Along with cotton, there has been a lot of change in the currency market too. Dollar has gained on the currency of almost all countries including India.

आने वाले महीनों से है उम्मीद

विशेषज्ञों के अनुसार कपास की आवक कम आने के मुख्यतः दो कारण है। पहला किसानों को कपास के भाव बढ़ने की उम्मीद है और इसीलिए वे माल बेचने की जगह मनचाही कीमत मिलने के इंतजार में है। वर्तमान में कपास के भाव 8 से 9 हजार प्रति क्विंटल के बीच है जबकि किसान को उम्मीद है कि पिछले साल की तरह इस बार भी कपास भाव 10 हजार से ज्यादा होंगे। इसी उम्मीद में ज्यादातर किसानों ने अपना कपास होल्ड करके रखा हुआ है। इस वजह से मंडी में आवक बहुत धीमी बनी हुई है। वही दूसरी वजह यह बताई जा रही है कि दशहरे के समय लगातार आई तेज बारिश से कपास के पौधों को नुकसान हुआ है और अब उनकी कटाई थोड़ी देर से होगी। हालांकि उम्मीद जताई जा रही है कि नवंबर अंत तक कपास की आवक तेज होगी और व्यापार में गति आएगी।

X

SIS CONNECT

For daily Market updates and all your textiles related issues **DOWNLOAD** our app now!!

INSTALL NOW

(Register now for free trial)

RAKSHA BHAGAT JAIN (EDITOR) / CONTACT - +91 - 74150 28064